बकरी के दूध का प्रसंस्करण करें अधिक लाभ कमाएं

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

डॉ. दिनेश एम. चव्हाण
डॉ. अरूण कुमार
डॉ. गजेन्द्र माथुर
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी विभाग

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां, वल्लभनगर (उदयपुर)
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

बकरी के दूध का प्रसंस्करण करें, अधिक लाभ कमाएं

भारत में सबसे अधिक बकरियों (16%) की संख्या राजस्थान में है एवं बकरी के दूध का सर्वाधिक उत्पादन भी राजस्थान में ही होता है जो बकरियों के कुल दूध उत्पादन का 35 प्रतिशत योगदान करता है। बकरी पालन राजस्थान के छोटे किसानों की आय को बढ़ाने में सहायक है।

बकरी के दूध से बनने वाले दुग्ध पदार्थ मनुष्य के जीवन में एक अलग अहमियत रखते हैं। क्योंकि मनुष्य के अच्छे स्वास्थ के लिए बकरी का दूध लाभकारी है। बकरी के दूध में पानी, लैक्टोज लवण, विटामिन इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। ऐसा माना गया है की बकरी का दूध बच्चों तथा बड़ों के लिए बहुत उपयुक्त है। बकरी के दूध की बढ़ती हुई मांग और दूध विक्रय की सहकारी क्षेत्र में बढ़ती हुई लाभदायक व्यवस्था को देखते हुए अब अधिकतर ग्रामीण बकरी पालन को मात्र परंपरागत जीवन व्यवस्थापन मानते हुए एक लाभदायक व्यवसाय के रूप में अपनाने की चेष्टा कर रहे हैं।

हम सब जानते हैं कि बकरी को "गरीब की गाय" के रूप में जाना जाता है क्योंकि बकरी से किसी भी समय दूध निकाला जा सकता है। बकरी को चलता फिरता रेफ्रिजरेटर भी कहा जाता है। बकरी के दूध की महत्ता देखते हुए इस दूध से विभिन्न प्रकार के उत्पाद की बहुत अधिक मांग है। बकरी के दूध से मुख्यतः पनीर, श्रीखंड, फ्लेवर्ड मिल्क, लस्सी, चीज, पाउडर इत्यादि बनाये जा सकते हैं। इन उत्पादों की विदेशों में भी बहुत अधिक मांग है, इसलिए बकरी के दूध से दुग्ध उत्पाद तैयार कर अधिक लाभ अर्जित किया जा सकता है। बकरी पालन का राजस्थान के ग्रामीण जीवन में सामाजिक एवं आर्थिक रूप से विशेष स्थान हैं। बकरियां ग्रामीण समाज के कमजोर और अल्प आय वर्ग के परिवारों को दूध व दुग्ध पदार्थ द्वारा पोषण व सुरक्षा प्रदान करती है। भारत में बकरियों की 34 नस्ल पायी जाती है इनमें से राजस्थान में पाई जाने वाली प्रमुख तीन नस्लें हैं।

सिरोही नस्ल : सिरोही बकरियां उत्तर–पश्चिम एवं अर्धशुष्क क्षेत्रों के अंतर्गत पाली जाने वाली नस्लों में प्रमुख है। सिरोही नस्ल के नाम का उद्‌गम राजस्थान के सिरोही जिले से माना गया है। इस नस्ल की बकरियां राजस्थान में उदयपुर, राजसमंद, सिरोही, अजमेर, नागौर, चित्तौरगढ़ एवं भीलवाड़ा जिलों में पायी जाती है। सिरोही बकरियां द्विउपयोगी (मांस एवं दूध) होती है। सिरोही बकरी पालन को न केवल आजीविका के अतिरिक्त स्त्रोत के रूप में अपनाया जा सकता है अपितु इसमें रोजगार की विपुल संभावनाएं विद्यमान होती है। इनका दुग्ध उत्पादन 100 किलोग्राम (115 दिनों में) होता है।

मारवाड़ी नस्ल : इस नस्ल की बकरी राजस्थान के जोधपुर, बीकानेर, नागौर, जैसलमेर, बाड़मेर में पायी जाती है। यह मध्यम आकार की काले रंग की बकरी है। इसका शरीर लम्बे बालों से ढ़का होता है। कान चपटे व मध्यम आकार के नीचे की ओर लटके होते हैं। इनका दुग्ध उत्पादन 95 किलोग्राम (115 दिनों में) होता है।

जखराना नस्ल : यह नस्ल राजस्थान के अलवर जिले एवं इसके आसपास के क्षेत्रों में पायी जाती है। यह आकार में बड़ी तथा काले रंग की होती है। इनके मुँह व कानों पर सफेद रंग के धब्बे पाये जाते हैं। इनका दुग्ध उत्पादन 120 किलोग्राम (115दिनों में) होता है।

बकरी के दूध का पोषक महत्व

बकरी के दूध में, वे सभी तत्त्व पाए जाते हैं जो कि मनुष्य को स्वस्थ रखने में सहायक होते हैं। प्रचुर मात्रा में प्रोटीन, वसा, लैक्टोज, लवण तथा विटामिन बकरी के दूध में होते हैं। ऐसा माना जाता है कि बकरी का दूध गाय के दूध से बच्चों तथा बूढ़ों के लिए अधिक गुणकारी होता है और मनुष्य के दूध की गुणवत्ता के बराबर होता है।

बकरी के दूध का संगठन

प्रोटीन	–	3.5 प्रतिशत
वसा	–	3.8 प्रतिशत
लैक्टोज	–	4.1 प्रतिशत
लवण	–	0.8 प्रतिशत

बकरी के दूध में कैल्सियम, मैग्नीशियम व फॉस्फोरस की प्रचुर मात्रा पायी जाती है। बकरी के दूध से हमें 70 कैलोरी ऊर्जा प्रति 100 मि.ली.प्राप्त होती है। बकरी के दूध में अल्फा केसीन अधिक पायी जाती है जिससे बकरी के दूध से बने पदार्थ मुलायम होते हैं, क्योंकि इसमें पानी के रखने की क्षमता बढ़ जाती है और दुग्ध पदार्थ कम गाढा होता है।

गाय के दूध की तुलना में, बकरी का दूध पचाने में आसान होता है, इससे एलर्जी कम होती है, कैल्शियम अधिक होता है, कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करता है। त्वचा की चमक को बढ़ाता है जिससे महंगे सौंदर्य प्रसाधनों में बकरी के दूध का उपयोग बहुतायत में होता है। यह पोषक तत्वों के अवशोषण को बढ़ाता है। इसलिए बकरी के दूध की डेंगू, ब्लडप्रेशर, शूगर, कोलेस्ट्रॉल और अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से पीड़ित लोगों में अधिक मांग है। वैज्ञानिकों का मानना है कि डेंगू बुखार के इलाज के लिए बकरी का दूध बहुत सहायक है, क्योंकि यह सीधे मानव प्रतिरक्षा प्रणाली को संशोधित करता है। बकरी का दूध डेंगू के मरीज में प्लेटलेट्स की संख्या को बढ़ाता हैं एवं शारीरिक द्रव्य का सामंजस्य स्थापित करता है। जिन लोगों में गाया के दूध से लैक्टोज असहिष्णुता/एलर्जी होती है उनके लिए बकरी का का दूध एक अच्छा विकल्प है।

बकरी पालन का राजस्थान के छोटे एवं सीमांत किसानों की जीविका और उनकी आय को बढ़ाने में अमूल्य योगदान है। दूध के औषधीय गुणों के विषय में उपभोक्ता को जागरूक करने की आवश्यकता है जिससे दूध विपणन में वृद्धि हो सके। पशुपालन की नवीनतम एवं आधुनिकतम तकनीकों को अपना कर बकरियों की नस्ल सुधार कर दूध का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। बकरी के दूध का यदि

प्रसंस्करण किया जाए तो इस क्षेत्र में भी अपार संभावनाएं है। बकरी पालन से किसानों की आय दोगुनी करने में, पोषण और ग्रामीण महिला सशक्तीकरण में सुधार करने की इस क्षेत्र में बहुत अधिक संभावनाएं है। यह ग्रामीण क्षेत्र में निवेश, रोजगार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

आजकल बाजार में बकरी के दूध के औषधीय गुण होने के कारण काफी अच्छा मूल्य प्राप्त हो रहा है। यदि पशुपालक बकरी के दूध का प्रसंस्करण करें तो उससे आर्थिक लाभ हो सकता है। बकरी के दूध से विभिन्न प्रकार के दुग्ध पदार्थ तैयार किये जा सकते है जैसे– पनीर, चीज, श्रीखंड, सुगन्धित दूध इत्यादि जिन्हे बाजार में अच्छी तरह पैक कर अच्छे मूल्य में बेचा जा सकता है और लाभ कमा सकते है। बकरी के दूध से विभिन्न दुग्ध पदार्थ बना के बेचने पर किसानो को अधिक से अधिक लाभ मिल सकता है और उनकी आर्थिक स्थिति सुधर सकती है।

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां, वल्लभनगर (उदयपुर) में सिरोही बकरी के दूध से बने दुग्ध उत्पाद (पनीर), लस्सी व श्रीखण्ड पर अनुसंधान किया गया है। बकरी के दूध के उत्पाद सुपाच्य, स्वादिष्ट व गुणवता पूर्ण है। इसे गाय व भैंस के दूध से बने प्रसंस्करण उत्पादों की तरह काम में लिया जा सकता है साथ ही ये उत्पाद औषधीय गुणों से भी परिपूर्ण है।

तकनीकी मार्गदर्शन

प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

अधिष्ठाता

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां (उदयपुर)

::- सम्पर्क सूत्र -::

डॉ. दिनेश एम. चव्हाण

डॉ. अरूण कुमार

डॉ. गजेन्द्र माथुर

पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी विभाग

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां, वल्लभनगर (उदयपुर)

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर मो. : 9784105819